का
कुमार
कमल शुक्ल

कलिंग का राजकुमार

कलिंग का राजकुमार

लेखक
कमल शुक्ल

देशाटन

कलिंग का राजकुमार पुरुषोत्तमदेव बहुत दिनों से योजना बना रहा था कि वह देशाटन के लिए जायेगा। पूरे भारत का भ्रमण करेगा। वह अनुभव प्राप्त करेगा।

आखिर उसकी योजना बन गयी और वह जाने की तैयारी करने लगा।

कलिंग नरेश ने अपने राजकुमार के साथ सेना की एक छोटी-सी टुकडी कर दी। इनमें अंग रंक्षक थे, हाथी और घोडे भी थे। रथों के अतिरिक्त पैदल सैनिक भी थे।

राजकुमार की यात्रा आरम्भ हो गयी। सबसे आगे कलिंग की राज्य पताका फहरा रही थी। पीछे बाजे बज रहे थे। राजकुमार श्वेत अरबी घोडे पर सवार था। इस घोडे के कलंगी बंधी थी। इसके माथे पर हीरे जवाहरातों का साज था।

इस स्पंदन के गले में खूब मोटी और चौडी सोने की जंजीर पड़ी थी। जिस पर गंगा-जमुनी का काम हो रहा था।

इस घोड़े को उडन बछेड़ा कहा जाता। वह दुलकी चाल चलता। इसके टाप जब धरती पर बजते तो सुनने वाले मुग्ध हो जाते। घोडे के चारों पैरों में सोने की झांझरें पहनाईं गयीं थीं। उनमें घुंघरू थे जो गति के साथ मधुर स्वर में बजते थे।

इस घोडे की चाल का एक नया अन्दाज था। यह अपने स्वामी के

प्रति इतना ज्यादा वफादार था कि राजकुमार पुरुषोत्तम देव को उस पर गर्व था। वह प्यार से उसकी पीठ थप-थपाता, उसके सिर पर स्नेह पूर्वक हाथ फेरता, उसकी बलाएं लेता और उसका मुंह भी चूमता। वह कहता-"चल मेरे साथी तेरे बिना मुझे मंजिल नहीं मिल सकती, तू ही मेरी मंजिल है और तू ही मेरा रास्ता है।"

राजकुमार पुरुषोत्तम देव कलिंग से बहुत दूर आ गया था। वह थक चुका था। उसका-घोड़ा भी विश्राम चाहता था।

राजकुमार ने अपने सचिव से पूछा-"मंत्रिवर अब हम डेरा डालना चाहते हैं ? हमारा पडाव कहां होगा ? वह सामने कौन-सा जंगल है ?"

"राजकुमार यह कांची का जंगल है। अब हम लोग कांची राज्य में आ गये हैं। पड़ाव यहीं डाल दो। मैं सबको रुकने का आदेश देता हूं।"

"जैसी राजकुमार की इच्छा।"

अब मंत्री ने घोषणा कर दी कि हमारा दल यहीं पड़ाव डालेगा। राजकुमार यहीं विश्राम करेंगे। उनकी सुविधा के लिए सभी साधन जुटा दिये गये।

डेरा डाल दिया गया। राजकुमार पुरुषोत्तम देव अपने शिविर में आराम करने लगा। धरती पर मखमल का गलीचा बिछा था। उसके दोनों ओर गाव तकिये लग रहे थे। ये तकिये मखमल के थे। इन पर जरी का काम था। सामने ही सोने की सुराही में चांदी की चौकी पर पानी रखा था। राजकुमार के हाथ में स्वर्ण पात्र था। उसने जल मांगा। तत्क्षण ही उसकी आज्ञा का पालन हुआ। यह मंत्री ही था जिससे कुमार कहने लगा-"कल दोपहर तक हम इसी स्थान पर विश्राम करेंगे। तीसरे पहर हमारी सेना कूंच करेगी और हम आगे बढ़ेंगे।"

रात आकर चली गयी सवेरे की सूचना चिड़ियों के कलरव गान ने दी। राजकुमार ने गुलाब जल से मुंह धोया उसने फलों का रस पिया

और फिर तम्बूल का वीणा मुंह में दाब शिविर से बाहर आ गया।

राजकुमार ने देखा कि प्रकृति ने अनुपम शृंगार किया है। वह नई नवेली दुल्हन जैसी लग रही है। उसकी छटानिराली है। उसका मन मुग्ध हो गया और हरीतिमा ने उसे मोह लिया।

राजकुमार ने सामने से जाती हुई हिरणों की एक टोली देखी। उसमें काले हिरण थे वे चौकड़ी मार रहे थे। श्वेत मृग भी थे जो मन्द गति से चल रहे थे। उनके छौने भी थे जो कुलाचें भरते।

राजकुमार ने पास खड़े अपने समवयस्क मंत्री की ओर देखा वह मुस्कराया और मंत्री को प्रसन्न करता हुआ हौले-हौले कहने लगा—"मंत्रिवर ये हिरण कितने सुन्दर हैं। आखिर मैं क्षत्री हूं। मेरी ध्वनियों मे क्षत्राणी का खून संचार कर रहा है। यदि तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो मैं कुछ देर आखेटकर लूं ?"

"राजकुमार, तुम राजा हो, मैं मंत्री हूं। मैं आपका समर्थन करता हूं कहिए मेरे लिए क्या आज्ञा है ?"

"आज्ञा ?"

"हां राजकुमार आज्ञा दो।"

"कहां है मेरा तूर्णीक ?"

"राजकुमार आप का तरकस शिविर में है, अभी मंगवाता हूं और आज्ञा ?"

"मेरा धनुष कहां है ?"

"राजकुमार वह भी अभी आता है।"

"ठीक है मंत्री जी मैं अकेला ही शिकार खेलने जाऊंगा। बहुत सुन्दर हिरण है इसकी मृग छाला देखने वालों का मन मोह लेगी।

तरकस आ चुका था। राजकुमार ने उसे कंधे पर लटकाया उसने दाहिने हाथ मे धनुष पकड़ा और उसकी प्रत्यंचा खींच कर डोरी को आजमाया।

फिर पुरुषोत्तम देव ने रकाब पर पैर रखा वह घोड़े की पीठ पर

कसी हुई जीन पर आ बैठा। उसने लगाम हाथ मे ली, घोड़े को प्यार से पुचकारा। बस फिर जैसे ही लगाम ढीली हुई घोडा हवा से बातें करने लगा।

हिरण भाग रहे थे। राजकुमार का घोडा उनके पीछे दौड रहा था। आखिर एक सुनहला हिरण झाड़ी में छिप गया। राजकुमार भी घोडे से उतर पडा और द्रुतगति के साथ झाडी की ओर बढा।

तभी अचानक दो व्यक्तियों ने आकर राजकुमार की राह रोक ली। ये काले-कलूटे थे। ये सैनिक भेष में थे। दोनों ने अपने-अपने भाले राजकुमार के सामने आडे खडे कर दिये।

राजकुमार चौंका उसने दोनों अजनबियों की ओर देखा। और फिर चौंकते स्वर में पूछने लगा—"यह क्या ? तुम लोग कौन हो ? मेरा रास्ता क्यों रोक रहे हो ?"

"लगता है कि तू कोई राजा या राजकुमार है। तूने मुकुट पहन रखा है, तेरी पोशाक राजपूती है। शायद तू क्षत्री है। तभी शिकार का शौक है और यहां हिरण मारने आया है।"

"तुम लोग जो कह रहे हो वह सब ठीक है। मुझे यह बतलाओ कि मेरा रास्ता क्यों रोक रहे हो ?"

"रास्ता ही नहीं रोक रहे हैं अभी तुझे बांध कर हम दोनों राजकुमारी पद्मावती के सामने ले जायेंगे।"

"तब तो तुम लोग बडे बहादुर हो, कहां है तुम्हारी राजकुमारी ?'

"यह कांची राज्य है। आगे ही राजकुमारी का उद्यान है। हम लोग उनके रक्षक हैं। तुम यहां हिरणो का शिकार करने आये हो। तुम वन की शांति भंग कर रहे हो। तुम्हें हम बांध कर राजकुमारी के सामने ले जायेंगे, फिर तुम्हें दण्ड दिया जायेगा। तुम कारागार में डाल दिये जाओगे। तुम अजनबी हो। तुम्हारे साथ कोई रियायत नहीं होगी।"

"बहुत खूब। अच्छा आओ अब दोनों मिलकर मुझे पकड़ो में बन्दी बनने के लिए तैयार हूं।"

राजकुमार ने जैसे ही यह कहा कि एक आदमी उस पर तेजी से झपटा।

पुरुषोत्तम ने उसे उठाकर धरती पर पटक दिया, फिर उसकी छाती पर चढ बैठा।

तभी दूसरे व्यक्ति ने पीछे से आकर राजकुमार पर मुक्के का प्रहार कर दिया।

राजकुमार ने बाये हाथ से उसका मुक्के वाला हाथ पीछे से पकडा और उसे घुमा कर दूर आगे फेक दिया। उसने गिरे हुए पहले व्यक्ति के सीने पर दो लातें मारीं। और फिर हंस कर कहने लगा–"मुझे एक ही दु ख है कि तुम दो क्यों आये। बाहों में जोश आ गया है। ऐसे ही बीस जवान और चाहिए तुम दोनो को उठा–उठा कर पटकता हू तो दोनों मर जाओगे। कान खोलकर सुन लो मैं कलिंग का राजकुमार हू मै क्षत्री का बेटा हू, युद्ध करना और शिकार खेलना मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। दोनों भाग जाओ। मैं तुम्हे मौत के घाट उतारना नहीं चाहता।"

अब दोनों आदमी उठे और तेजी से राजकुमार पर झपटे।

तब राजकुमार ने दोनों को अपनी बाहों मे दबोच लिया। वह उन्हे बगल में दाबे था और मुस्कराता हुआ कह रहा था–"तुम दोनों मानोगे नहीं, चलो तुम्हें पेड से बांधे देता हू तुम्हारा दण्ड यही है।"

राजकुमार आगे बढा दोनों जवान उसकी बगल में दबे फडफडा रहे थे।

❑

कांची की राजकुमारी

राजकुमारी पद्मावती राजसी उद्यान में सरोवर के तट पर एक श्वेत संगमरमर की शुभ्र शिला पर आसीन थी। पीछे खडी दो दासियां उस पर मोर पंख से चंवर डुला रही थीं। वह प्रसन्न थी उसकी मुद्रा स्फीत थी। और वह कह रही थी–"न कोई आया और न कोई आयेगा। मैं अकेली हूं। जीवन का ज्वार कह रहा है कि साथी चाहिए।"

तभी एक सेविका मदिर खिल-खिला करके हंसी। वह भी उन्मादनी हो रही थी। भरपूर यौवन के प्रवाह से प्रेरित होकर वह उन्मत्त हो कर बोल उठी–"राजकुमारी को जीवन साथी चाहिए। मुझे भी ऐसे ही मर्द की आवश्यकता है। हमारी जवानी फूल बन कर मुस्करा रही है। हमारी मादकता चारों ओर फैल रही है। युवापन कहता है कि तारों से खेलो, चांद का मुंह चूम लो, फिर देखो जिन्दगी अपने आप ही मुस्करा देगी।"

"चल हट माधुरी, तू बडी नटखट हो गयी है।"

"राजकुमारी, मैं तुम्हारे मन की दशा जानती हूं। तुम्हारे सपनों का सौदागर आने ही वाला है। वह तुम्हें पलकों पर बैठायेगा। तुम्हारी आंखों में खो जायेगा।"

"राजकुमारी जी को मैं अभिवादन करता हूं।"

"ऐं ! ये कौन है। परिचित उद्यान में दासियां हैं। नारियों के समाज में नारियों को ही आना चाहिए। यह अजनबी पुरुष कौन है ?"

"क्षमा करें राजकुमारी मैं कलिंग का राजकुमार हूं। मेरा नाम

पुरुषोत्तम है। मैं देशाटन के लिए निकला हूं।''

''राजकुमारी पद्मावती ने अपनी दृष्टि नत कर ली। वह कनखियो से पुरुषोत्तम देव की ओर देखने लगी। युवक उसे सिह पुरुष जैसा लगा। वह उसे देखते ही उसमें खो गयी। कई क्षण तक वह देखती रही। उसका स्वर मौन था। आंखें धूप-छांह का खेल खेल रही थीं।''

''क्षमा करें राजकुमारी; मैंने आपके दोनो रक्षको को वृक्ष से बाध दिया है। वे उदण्ड थे। यदि वे मेरे साथ अभद्र व्यवहार न करते तो मैं ऐसा कभी नहीं करता। मैं देशाटन के लिए निकला हूं। मेरा नाम पुरुषोत्तम देव है। यहां मैंने अपना डेरा डाला है कल प्रात ही यहा से प्रस्थान कर दूंगा।''

राजकुमारी मौन की मौन रही। सामने परपुरुष था। वह भी अपरिचत था। वह मरमाहत हो गयी। उसने अपने को उस पर निछावर कर दिया। वह कनखियों से उसकी बडी-बडी आंखें देखने लगी। जिसमे एक अपूर्व ज्योति जल रही थी।

पुरुषोत्तम देव खड़े के खड़े रह गये। पद्मावती वहां से उठ कर चल दी। उसने आगन्तुक को कोई भी उत्तर नहीं दिया था।

राजकुमार ने राजकुमारी की गतिविधि देखी तो मुस्करा दिया। उसका अन्त करण कहने लगा कि कुलीन बालायें मर्यादा का उलंघन कभी नहीं करतीं। राजकुमारी में भी शील है, संकोच है। वह मर्यादा की सीमा में है। उसकी आंखो में प्यार छलकता था किन्तु उसका स्वर मौन था। ऐ मुझे क्या हो गया है। ऐसा लगता है कि राजकुमारी ने मुझे अपने स्वाभाविक आकृषण की डोर से बांध लिया। पहली नजर और पहली झलक में ही प्यार हो गया। लोग सच कहते हैं कि प्यार किया नही जाता वह अपने आप हो जाता है। यह मैंने क्या किया ? मुझे यहां नहीं आना चाहिए था। यह कांची की राजकुमारी है। यह अप्सरा से भी अधिक सुन्दर है ऐसा क्यों ?

पद्मावती जा चुकी थी। उसकी परिचारिकाएं भी अनुगमन कर

गयीं। राजकुमार ठगा-सा खड़ा था। अब उसने पलकें बन्द कर लीं थीं। उसके सामने अंधेरा था और वह उस अधेरे में पद्मावती को देख रहा था।

राजकुमार की यह परिस्थिति थी और उधर पद्मावती महल की ओर जाती हुई दासियों से कह रही थी–"वह युवक बहुत बलवान है। उसकी भुजाओं में असीम बल है। उसका मस्तक मणि की तरह चमकता है। उसके मुख पर ओज है। उसने मेरे दो रक्षको को अकेले ही पेड से बाध दिया वह महाबलवान है। देखने में ऐसा लगता कि साक्षात स्वर्ग का राजा इन्द्र है।

दासियां सब कुछ समझ गयी थीं किन्तु वे मौन थीं। उनके अन्त करण.कह रहे थे कि राजकुमारी को अजनबी से प्यार हो गया। पहली ही दृष्टि में राजकुमारी उसकी हो गयीं। वह प्यार बडा चोर है। बतलाता नहीं और एक क्षण में दूसरे के हाथ बिक जाता है।

पद्मावती कहती जा रही थी–"उसमें पराक्रम है। उसमें वह है जो अन्य किसी पुरुष में नहीं। वह कलिंग का राजकुमार है। उसने मुझे मोह लिया है। आह मैं नहीं जानती थी कि प्यार कैसे होता और किस तरह वह हो जाता। जल्दी चलो मां और पिता जी को बतलाना है। उस भोले सनम को अतिथि बनाना है। कहीं वह चला न जाय मेरे प्राण अधर मे लटक जायेंगे।

फिर जब अन्त:पुर आ गया तो महारानी को सामने देखते ही पद्मावती वहां रुक गयी। उसने देखा कि उसके पिता भी वहां उपस्थित हैं। और महारानी से बातें कर रहे हैं।

पद्मावती ने पिता को प्रणाम किया। उसने व्यस्त स्वर मे सारा हाल बतलाया और फिर जल्दी-जल्दी कहने लगी–"पिताजी वह युवक सौम्य है। उसमें शांति का खजाना है। आप देखेगे वह लाखों में एक है। मैं उससे प्रभावित हूं। देखिये न उसने अकेले ही दो सैनिकों को पेड से बांध दिया।"

कांची नरेश ने पद्मावती की बातें सुनीं तो उन्हें महान हर्ष की अनुभूति हुई उन्होंने फौरन ही प्रतिहारी को भेजकर महामत्री को बुलवाया और उसे तत्क्षण ही आदेश दिया। कलिंग के राजकुमार को सादर अथिति के रूप मे महल में लाया जाय। हम उसका स्वागत करेंगे। वह युवक होनहार है।

राजकुमार अब भी उद्यान मे ज्यों का त्यों खडा था। वह किकर्तव्यविमूढ़ हो रहा था। वह सोच ही नहीं पा रहा था कि उसे कहा जाना चाहिए और क्या करना चाहिए।

ठीक तभी काची के प्रधानमंत्री ने राजकुमार की मौन समाधि भंग की। उसने सामने आकर अभिवादन करते हुए विनम्रता के साथ मृदुस्वर में कहा–"आपको हमारे महाराज बुला रहे हैं। आप कलिंग के राजकुमार हैं न। आप हमारे अतिथि हैं। आप सादर निर्मंत्रित हैं चलिए। अपने कोमल चरणों से हमारे महल को पवित्र कीजिए।"

'ऐं, मुझे कांची नरेश ने बुलाया है। मैं अवश्य चलूंगा।" और कहने के साथ राजकुमार पुरुषोत्तमदेव महामंत्री के साथ चल दिया। वह अन्त पुर में लाया गया उसे बैठने के लिए चांदी की चौकी दी गयी। उसका अतिथ्य हुआ। जलपान में उसे सर्वोत्तम पेयपदार्थ और मिष्ठान दिये गये। उसने राजा का आभार प्रगट किया। और प्रसन्नता से आलोडित होकर प्रमुदित स्वर में कहने लगा–"आप धन्य हैं कांची नरेश। मेरी शुभकामना है कि आपके सौभाग्य का सूरज हमेशा इसी तरह चमकता रहेगा। मुझे आपका राज्य बहुत अच्छा लगा। सचमुच आप सराहनीय हैं।"

"बेटा पुरुषोत्तम देव तुम्हें देखकर ऐसा लग रहा है कि भगवान ने मुझे बेटा भेज दिया। मैं बेटी का बाप हूं। पुत्र का सौभाग्य मुझे नहीं मिला यह मेरी तकदीर है।"

"राजन मेरे पिता का कहना है कि विधाता के न्याय पर सतोष कर लेना मनुष्य का परम धर्म है मुझे आपकी राजधानी कुछ अच्छी

लगी, आपका महल भी रमणीक है, आपका अन्त.पुर ऐसा लग रहा है जैसे यह मेरा ही घर है और ।''

"और क्या राजकुमार ?''

"और आपकी राजकुमारी बहुत अच्छी है आपने उसे उचित शिक्षा दी है। उसके पैर मर्यादा की सीमा से बाहर नहीं जा सकते। कहना यह चाहिए कि वह मर्यादा की बेटी है और कांची की राजकुमारी।''

"राजकुमारी अब कुछ दिन तक तुम मेरे अतिथि बन कर रहोगे मुझे तुमसे थोडी ही देर में घना लगाव हो गया है। ऐसा लगता है कि हम दोनों पूर्वजन्म के सम्बन्धी हैं।''

राजकुमार पुरुषोत्तम देव बहुत अधिक प्रभावित हो गया था। वह राजा के प्रति श्रद्धा विभोर हो गया उसने उनके चरण स्पर्श कर लिए। और श्रद्धा भरे स्वर मे कहने लगा–"आप मेरे धर्म-पिता हैं। आपने मुझे बेटा कहा, आपने मुझे अपना कितना अधिक प्यार दिया है।''

राजा ने पुरुषोत्तम देव को ले जाकर अतिथिग्रह में ठहराया। उन्होंने सेविकाओं को आदेश दिया कि राजकुमार का विशेष ध्यान रखा जाय। अभी कुछ दिन वह उनका मेहमान रहेगा। उसके बाद उसकी यात्रा आरम्भ होगी।

राजकुमार अतिथि ग्रह में आ गया वहां उसके लिए स्वर्ग-सुख जुटाये गये थे। साधन ऐसे उपलब्ध थे जैसे लगता था कि वह कोई देवता है और उसकी पूजा के लिए यह सब आयोजन किया गया है। ❑
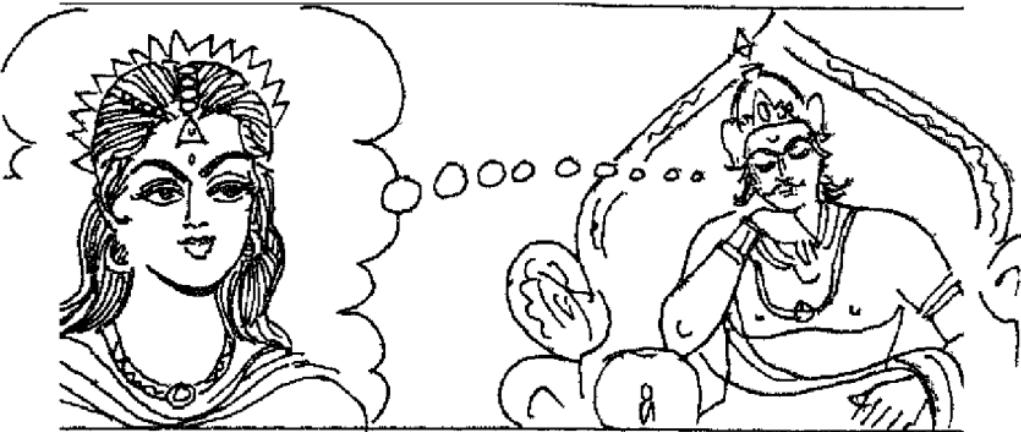
कांची से कलिंग तक

राजकुमार पुरुषोत्तम देव कांची नरेश का मेहमान बन गया था। उसने डेरे में सूचना भेज दी उसने घोषणा करवायी कि वह एक सप्ताह के बाद यहां से प्रस्थान करेगा।

राजकुमार नित्य सवेरा होते ही अन्त.पुर में बुलाया जाता। महारानी उससे हंस-हंस कर बाते करतीं। पद्मावती का संकोच भी कम होने लगा था। अब वह भी राजकुमार से बातें करती। इससे उसको आत्म-सुख की अनुभूति होती।

नित्य प्रभाव की बेला में प्राची के अम्बर में सिन्दूरी सूरज निकलता उसकी सुनहली किरणें पहले पेड़ों की फुनगियो को छूतीं फिर वे धरती का मुंह आकर चूमतीं। दिन फैल जाता, जन-जीवन जागरूक हो जाता।

उसके बाद दोपहर आती तीसरा पहर भी अपनी कहानी कहता और फिर सांझ आ जाती उसके बाद आती रात। तब दिशाऐं धूमिल हो जातीं। तारे चौकीदार बनते वे धरती पर पहरा देते।

एक सप्ताह ऐसे बीत गया जैसे रात के बाद प्रभात आया हो।

अचानक एक दिन कलिंग से दूत आया। उसने आकर समाचार सुनाया कि कलिंग नरेश का देहान्त हो गया है। उनकी मृत्युदेह नाव में तेलभर कर उसमें रख दी गयी है।

राजकुमार पुरुषोत्तमदेव ने अपने माथे पर दोनों हाथ दे मारे, छाती

पीटी। वे दुःख के अथाह सागर मे डूब गये और काची से तुरन्त जाने की योजना बनाने लगे।

कांची नरेश की सहानभूति पुरुषोत्तम देव के साथ थी। राजकुमारी पद्मावती ने भी आंसू बहाते हुए पुरुषोत्तम देव को बिदा किया। उसने वचन लिया था कि राजकुमार कांची फिर आयेंगे और उसे अपने दर्शन अवश्य देंगे।

पुरुषोत्तम देव ने कलिंग की सीमा में जैसे ही प्रवेश किया। उन्हे शियारों के रोने की आवाज सुनाई दी। ऐसे ही दूर-सुदूर कुत्ते रो रहे थे।

राजकुमार सिर झुकाये महल की ओर बढ रहा था उसकी आंखों की कोरें गीली थीं और वाणी मूक थी।

कलिंग की राजधानी में शोक मनाया जा रहा था। राजा का अंतिम दाह-सस्कार पुरुषोत्तम देव ने पूर्ण किया। वे जब तक श्राद्ध नहीं हो गया तब तक रोते रहे, बिलखते रहे और पिता का स्मरण करते रहे।

इसके बाद मंत्रियों का प्रस्ताव परस्पर पारित हुआ जिसका निष्कर्ष यह निकला कि युवराज पुरुषोत्तम देव वयस्क हो गये हैं। कलिंग का मुकुट उनके माथे की शोभा बढायेगा। अपने पिता के वे ही एक मात्र उत्तराधिकारी हैं।

इस तरह पुरुषोत्तम देव का राज्याभिषेक हो गया।

अब पुरुषोत्तम देव कलिंग के राजा थे। उनका उत्तरदायित्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया था। अब उन्हें अवकाश नहीं मिल पाता वे हमेशा व्यस्त रहते।

किन्तु इन व्यस्त क्षणों में भी वे कांची की राजकुमारी पद्मावती को भूल नहीं पाते। जैसे ही पलकों के कपाट बन्द करते उन्हें वही चेहरा दिखाई पडता। वह चेहरा कभी मुस्कराता, कभी शरमाता, कभी लज्जा से नत हो जाता और उसमें संकोच सिमट आता।

इधर राजकुमार पुरुषोत्तम देव की यह परिस्थिति थी और उधर

पद्मावती अपने प्यार के देवता को नित्य सपनो मे देखती वह सपने के ससार मे अपने प्रियतम से मिलती और हस हस कर बाते करती, फिर जब सपना टूट जाता आंखें खुल जातीं तो वह दीर्घ उच्छ्वास लेती। उसके मुंह से एक उसास निकलती और उसका अन्तःकरण कहने लगता कि मैं तुमसे दूर हूं मेरे देवता। तुमने मुझ पर जादू डाला है। मै तुम्हारी हो गयी हूं। यह प्यार की कहानी किसे सुनाऊ। तुम सपनों मे आते और धोखा देकर चले जाते। तुम विचारों में आते मस्तिष्क मे छा जाते। तुमने ऐसा क्यों किया ? तुमने ऐसा जादू क्यो डाला ? मुझे नहीं पता था कि मुझे पहली भेंट में ही प्यार हो जायेगा।

इधर राजकुमारी पद्मावती ऐसा सोच रही थी और उधर काची नरेश अपने मंत्रियों और महारानी से परामर्श कर रहे थे कि पद्मावती अब युवती हो गयी है अत· उसके हाथ पीले कर देने चाहिए। वह कलिग के राजकुमार पर आसक्त है। दोनों को एक-दूसरे मे प्रेम हो गया है, यह बात छिपी नहीं रही। सभी दास और दासियां जानते हैं।

सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव पारित हुआ कि राजकुमारी पद्मावती का पाणिग्रहण संस्कार कलिंग के राजकुमार पुरुषोत्तम देव के साथ ही किया जायेगा।

राजकुमारी ने यह शुभ समाचार सुना तो वह कली फूल बन गयी। वह मुस्कराई उसका अन्तर हंसा। उसके कान सुनने लगे। हवा उनमें अपनी शहनाई बजा रही थी।

महारानी ऐसे ही अन्त·पुर की सभी नारिया मग्न दिखलाई पडती। वे एक-दूसरे से प्रसन्न होकर कह रही थीं कि अब हमारी राजकुमारी का ब्याह कलिग में होगा। वह कलिंग की महारानी बनेगी। वे अब उसके चरण चूमेगा। बिलासिता उसकी दासी बनेगी। ऋद्धि और सिद्धि दोनों आकर उस पर शांति का चवर डुलायेगी।

कांची में यह सम्वाद घर-घर फैल गया कि राजकुमारी पद्मावती का ब्याह कलिंग में होने जा रहा है। अब वह कलिंग की पटरानी

बनेगी। शीघ्र ही काची से टीका कलिग भेजा जायेगा ब्याह भी निकट भविष्य मे ही सम्पन्न हो जायेगा। राजधानी मे खुशिया मनायी जाने लगी। नगर सजाया जा रहा था।

राजपथ तो दूर रहे साधारण सडकों पर भी तोरण बनाये जा रहे थे। पताकाएं फहरा रही थीं। वन्दन वार बांधे गये थे। जिधर देखो उधर ही मांगलिक आयोजन होते और मंगल गीत सुनाई पडते।

प्रजाजन परस्पर एक-दूसरे से कहते कि राजकुमार लाखों में एक है। सबने उसे देखा है। ऐसा लगता है कि वह कोई देवपुरुष है और भूल से धरती पर आ गया है।

कुछ लोग ऐसा भी कह रहे थे कि कांची नरेश के कोई पुत्र नहीं है। अब कांची और कलिंग का राज्य मिल कर एक हो जायेगा। पुरुषोत्तम देव में इतनी क्षमता है। वह दोनों संभाल लेगा। वह एक महान योद्धा, परमविचारक और दूरदर्शी राजा है। शास्त्रों में लिखा गया है कि विश्व का विचारक वर्ग महान है। जिसमें गहरी सूझ है वही अपने मे सफल है। राजकुमार पुरुषोत्तम देव इन सब गुणों से पुंजी भूत हैं।

पद्मावती बडे से दर्पण के सामने जाकर खडी हो गयी। उसने उसमें अपनी सूरत निहारी और फिर दर्पण में मुस्कराती हुई पद्मावती से कहने लगी–"तुम्हारा ब्याह हो रहा है राजकुमारी। तुम्हारे हाथ पीले किये जायेंगे। तुम पराई बनोगी।"

दर्पण की पद्मावती मुस्कराती रही। शरमाती रही। ऐसे में ही उसमें संकोच समाया और वह झिझककर रह गयी।

तभी हाड-मास की पद्मावती दर्पण की राजकुमारी से कहने लगी–"यह प्यार क्यों हो गया ? यह क्यों हो जाता है ? कितना अनमोल है प्यार। मैं अपने को भूल गयी, मेरे दिल की दौलत लुट गयी और वह राजकुमार पुरुषोत्तम देव ने बटोर ली। देखो कब आते हैं वे ? उनके दर्शन कब होते हैं ? कोई आये तो उससे खबर भेज दूं कि वे अपने कपोल पर काजल का एक छोटा-सा टीका लगा लें फिर किसी की

नजर नहीं लगेगी। सचमुच वे बहुत ही रूपवान हैं।''

पद्मावती देख रही थी कि दर्पण भी राजकुमारी हंस रही थी। वह तनिक हटी, कंगन खनके काच की चूडिया उनसे टकरा कर बजने लगीं। हृदय में गुदंगुदी हुई वह दर्पण की ओर फिर उन्मुख हुई और उस शीशे की राजकुमारी से पूछने लगी। तूम मेरी छाया हो, तुम प्रति रूप हो, तुम आलोक हो, तुम प्रतिविम्ब हो। देखो कही साथ मत छोड देना। मै तुम्हें भी अपने साथ कलिग ले चलूगी। तुम पटरानी बनोगी तुम्हें भी राजमुकुट पहनाया जायेगा।''

ऐसे ही पद्मावती उद्यान मे जाकर फूलों से पूछती वह लताओ से बातें करती। भौरों को देखते ही उन्मादनी-सी कहने लगती कि जाओ भ्रमर जाओ, पिया के देश जाओ। उनसे कहना कि मैं आंचल फैलाये खडी हूं। वे ढेर-सी खुशियां लाये मेरा आंचल भर दें। मै नाचूगी, गाऊंगी, मैं उनकी बन जाऊंगी। वे पहले भी मेरे थे। अब भी मेरे है और अब तो अपने हो गये है।

❑
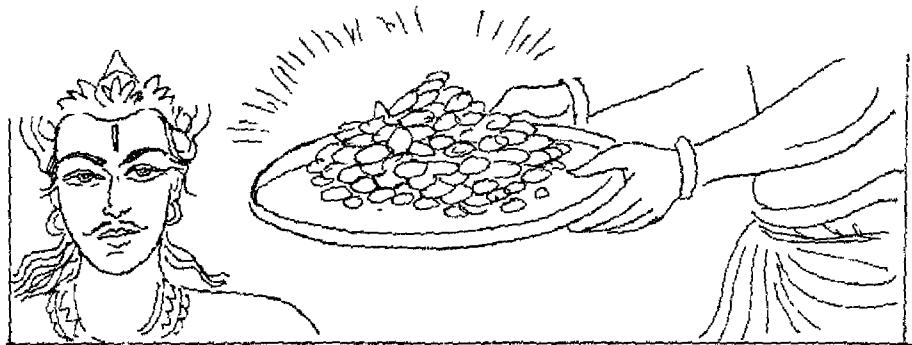
टीका

दासियों ने अपनी राजकुमारी की परिस्थिति देखी उन्होंने भली भांति पहचान लिया कि पद्मावती कलिंग के राजकुमार पुरुषोत्तम देव पर आशक्त हो गयी है। वह उसे प्यार करती है और उसके नाम की माला जपती है।

पद्मावती अब एक व्रत और नियम का पालन करने लगी थी। उसने पुरुषोत्तमदेव को अपना पति वरण कर लिया था। कलिंग मीलो दूर था। राजकुमारी विवश थी। वह अपने आराध्य देव को याद करती किन्तु उसके मन का देवता दूर था।

दासियो ने राजकुमारी की मन स्थिति का अध्ययन भलीभांति कर लिया था। आखिर वे महारानी के सामने पहुंची और उन्हें सब कुछ बतला दिया। एक दासी ने स्पष्ट कह दिया कि महारानी यदि हमारी राजकुमारी का ब्याह पुरुषोत्तम देव के साथ नहीं होता है। तो वे आत्म-हत्या कर लेंगी। जीवित नहीं रहेगी। उन्होंने पुरुशोत्तम देव को अपना पति वरण कर लिया है।

जब महारानी को यह सारा हाल मालूम हुआ तो काची नरेश (अपने पति) को बुलवाया। उनको सारा हाल बलाया गया कि राजकुमारी पद्मावती को कलिग नरेश पुरुषोत्तम देव से प्यार हो गया है यदि यह ब्याह नहः हुआ तो राजकुमारी आजीवन कुमारी ही बनी रहेगी।

कांची नरेश को जब सारी वास्तविकता का बोध हुआ तो वे

प्रसन्नता से फूले नहीं समाये। वे पद्मावती का हाथ पुरुषोत्तम देव के हाथ में देने के लिए सहर्ष तैयार हो गये।

दम्पत्ति में इस विषय को लेकर देर तक परामर्श होता रहा। दोनो बहुत ही सन्तुष्ट थे। वे भविष्य के स्वर्णिम सपने देखने लगे और परस्पर एक-दूसरे से कहने लगे कि पद्मावती कलिंग की पटरानी बनेगी। यह उसके सौभागय का प्रतीक है। यही उसका उज्ज्वल भविष्य है।

महामंत्री बूढा था। उसने जब यह समाचार सुना तो कांची नरेश से कहने लगा—"महाराज मुझे आज्ञा दीजिए मैं राजकुमारी का टीक लेकर कल ही कलिग जाऊंगा। यह सम्बन्ध सोने में सुहागा है और इसे हर हालत मे होना ही चाहिए।"

"महामंत्री तुम आज्ञा मांगते हो, मुझे लज्जा का अनुभव होता है। प्रधानमत्री राज्य का ही सब कुछ नहीं होता है वह राजा का रक्षक होता है। मुझसे आज्ञा मत मागो मुझे बतलाओ कि तुम क्या कर रहे हो और क्या हो रहा है।

अब महामंत्री ने राजा के चरणों पर अपना माथा टेक दिया। वह विनीत स्वर में कहने लगा—"कल प्रभात होते ही मै राजकुमारी का टीका लेकर कलिंग के लिए रवाना हो जाऊंगा।"

फिर जब प्रभात आया। तो कांची नरेश ने सवा लाख सोने की मोहरें तिलक के लिए संकल्प कीं। मंत्री ने प्रस्थान किया। वह कलिंग की ओर रवाना हो गया।

उधर कलिंग में पुरुषोत्तम देव ने राज्य की सारी बागडोर अपने हाथ में ले ली थी। मत्री साधन मात्र थे। सत्ता पर राजकुमार ने अपना पूर्ण अधिकार कर लिया था। वह दिव्यज्योति की तरह चमकता। उसका चेहरा प्रत्येक को प्रभावित करता। उस पर चमक थी। उस पर तेज था। उसमें एक आकर्षण शक्ति थी। जब कांची का प्रधानमंत्री कलिंग मे आया तो राजा पुरुषोत्तम देव को बहुत प्रसन्नता हुई। उन्होंने मंत्री को अतिथि ग्रह में भेजा और फिर बूढे महामंत्री को उसके पास इस उद्देश्य

से भेज दिया कि कांची का प्रधानमंत्री क्यों आया है। उसके आने का आशय क्या है।

दोनों मंत्रियो में रात को देर तक बातें हुई। दोनों ही बहुत प्रसन्न थे कि राजकुमारी पद्मावती का ब्याह कलिंग नरेश पुरुषोत्तम देव के साथ हो रहा है।

सवेरे पुरुषोत्तम देव का दरबार लगा। कांची महामंत्री ने उस दरबार की शोभा देखी। वह प्रभावित हुए बिना नही रहा। उसे लगने लगा कि कलिंग का राज्य अपने में सर्वथा सम्पन्न है। वहां कोई अभाव नहीं है। राजकुमारी पद्मावती वहां सुखी रहेगी वह वहां की पटरानी कहलायेगी।

कांची के प्रधान मंत्री का कलिंग में भव्य स्वागत किया गया। उसे एक सप्ताह तक अतिथि बनाकर ठहराया गया फिर जब उसने जाने का आयोजन किया तो राजा पुरुषोत्तम उसके सामने आ गये। वे विनीत स्वर में सम्मान के साथ कहने लगे—"मंत्रिवर आप मेरे पिता के तुल्य हो। मेरी आप से एक प्रार्थना है कि कल रथ यात्रा का उत्सव है। जगन्नाथपुरी का यह उत्सव पूरे भारत में प्रसिद्ध है कल रथ यात्रा का महोत्सव देखकर कांची जाइए।"

"जरूर देखूंगा राजन मैंने अभी तक सुना ही है मगर रथ यात्रा कभी देखी ही नहीं।"

"अरे इस रथयात्रा का क्या कहना है मंत्री जी। पूरे देश के लोग उमड़ आते है। लाखों की भीड़ होती है।"

"इसमें बलराम और उनके भाई जगन्नाथ जी और ऐसे ही उनकी बहन सुभद्रा की पवित्र मूर्तियां होती हैं। ये मूर्तियां रथों पर रखी जातीं हैं। श्रद्धालु भक्त जन इन रथों को खींचते। यही रथयात्रा का उत्सव है। इसी की भीड होती है।"

"यह तो बहुत अच्छा है राजन मैं इस महोत्सव को अवश्य देखूंगा।"

अवश्य देखिये मत्री जी। पुरी तीर्थ है। यहां बड़े भाग्य से आदमी आता और उसका जीवन सफल हो जाता है।"

इस तरह कांची के प्रधानमंत्री को पूर्ण संतोष हो गया। वह धर्मिक प्रवृत्ति का था। धर्म परायण था। इसी लिए रथयात्रा देखने के लिए उत्सुक हो उठा।

जैसे ही सवेरा हुआ स्थान-स्थान पर वीणा के विनन्दित स्वर सुनाई पडने लगे। पथ जल से सींच दिये गये। वे स्वच्छ कर दिये गये थे। हर थोडी दूर पर एक तोरण था। जो कदली पल्लवों से सज रहा था। रथयात्रा मन्दिर से आरम्भ होकर राजपथ पर होती हुई समुद्र तक जानी थी यही पुरी जगन्नाथ की रथयात्रा थी। इसको ही देखने के लिए देश के लोग लाखों की संख्या में पुरी जगन्नाथ आते हैं।

राजकीय वादन स्पष्ट सुनाई पडता। नगाड़ों पर चोटें पड रही थीं। तुरही तू-तू करतीं। ढोल बजते, रोशन चौकी पर तराने बुलन्द हो रहे थे।

रथयात्रा आरम्भ हो गयी। सुभद्रा बलराम और जगन्नाथ जी इन तीनों देवताओं की बडी-बड़ी मूर्तियां अलग-अलग तीन रथों में रखी गयीं। इन सब रथों में आगे रेशम के मोटे-मोटे रस्से बंधे थे। इन्हीं रस्सों को पकड कर लोग रथ आगे खींच रहे थे।

कांची के प्रधानमंत्री ने देखा कि राजा रथ के आगे का मार्ग स्वयं झाड़ू द्वारा साफ करता है। वह रथ को भी बुहारता वह उस पर भी झाड़ू लगाता। इसके के लिए कहा जा रहा था कि यह राजकीय परम्परा है और हर वर्ष ऐसा होता है।

कांची का प्रधानमंत्री चौंका। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया। वह घृणा से भर गया और पुरुषोत्तम देव के लिए सोचने लगा कि यह राजा मेहतर है। यह अपने हाथों से झाड़ू लगाता है।

कांची का प्रधानमंत्री बुरी तरह चौंक गया था। वह दु.खी मन से कांची लौटकर आया उसने अपने राजा को सारा हाल बतलाया और

फिर दुखी होकर कहने लगा कि कलिंग का राजा मेहतर है। वह रथ के आगे का मार्ग स्वयं अपने हाथो से झाड़ू द्वारा साफ करता है। यह महानीच काम है। ऐसे राजा के साथ अपनी राजकुमारी का ब्याह कभी नहीं करेंगे।

काची नरेश की समझ में प्रधानमंत्री की बातें अच्छी तरह आ गयीं। वे भी विमुख हो गये और वे भी पुरुषोत्तम देव की निन्दा करने लगे कि ऐसे राजा के साथ मुझे अपनी राजकुमारी का ब्याह नहीं करना है।

अब कांची के राजा सोचने लगे थे कि वे कलिग अपने प्रधानमंत्री को फिर भेजें। यह सम्बन्ध विच्छेद कर दें। उन्होंने योजना बना ली थी कि वे अपनी बेटी का स्वम्बर करेंगे ब्याह नहीं करेंगे।

कांची का प्रधानमंत्री कलिंग के लिए फिर रवाना हो गया। इस बार वह सम्बन्ध विच्छेद का प्रस्ताव लेकर जा रहा था।

❑
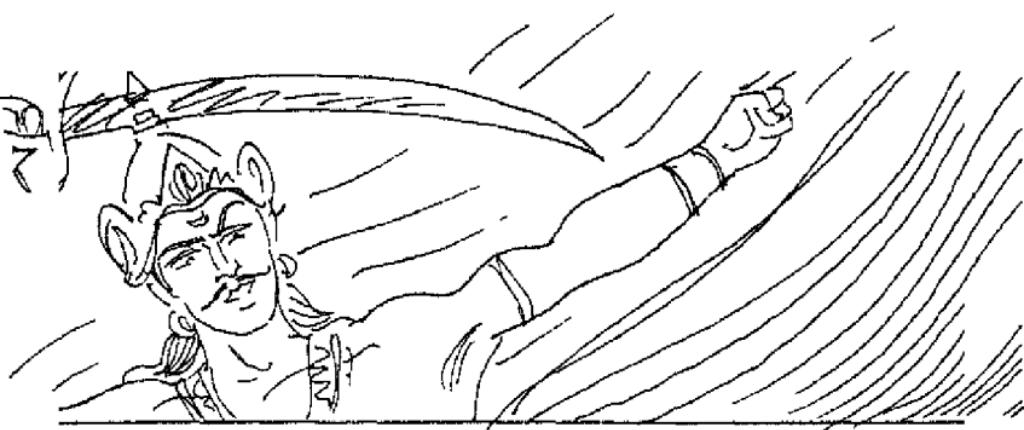
अपमान और युद्ध

दिन का सूरज छिप गया रात की विभीषिका सामने आ गयी थी। वह विषमुखी कह रही थी कि सत्य कड़ुवा है उसकी परीक्षा होने दो। प्यार सच्चा है, उसे कसौटी पर कसने दो, फिर देखो कि परिणाम क्या सामने आता है।

इधर कांची का प्रधानमंत्री कलिंग के लिए प्रस्थान कर चुका था और उधर राजकुमारी पद्मावती ने दृढ संकल्प कर लिया था कि यदि वह पुरुषोत्तम देव की चरणदासी नहीं बन पायी। तो वह जीवन ज्योति को सहज ही बुझा देगी। उसे ऐसा जीवन नहीं चाहिए जिसमें परिताप हो, सन्ताप हो और संतोष के लिए कोई भी संधि न हो। उसने अपनी योजना मन में रख ली। किसी से भी कुछ कहा नहीं।

उधर मंत्री कलिंग पहुंच रहा था। उसका अन्त.करण कह रहा था कि ऐसे राजा के साथ हमें अपनी राजकुमारी का ब्याह नहीं करना है जो झाड़ू लगाता हो, रथों को साफ करता हो और पथ बटोरता हो।

रात का गजर जल चुका था। उसकी हरी रोशनी सर्वत्र व्याप्त हो रही थी। कलिंग की पताका हवा में फहरा रही थी। तभी नौवत खाने के नगाडे पर जोर की चोट पडी। सूचना आ गयी थी कि कांची का प्रधानमंत्री कलिंग आया है।

'ऐसा क्यों ? यह मंत्री क्यों आया है ? यह अभी तो गया था और पूर्णतया सन्तुष्ट था फिर क्या हो गया ?''

राजा ने यह सोचा वह अकुलाहट से भर गया था, उद्विग्न हो गया था और उसकी समझ मे नहीं आ रहा था कि कांची का प्रधान मत्री उसके पास दुबारा क्यों आया है ?

मंत्री आ चुका था। वह अतिथिशाला में मेहमान बन गया।

सवेरे जब छज्जे की धूप दीवालों से उतरकर आंगन मे आ गयी। तब कहा गया कि पहला पहर बीत गया और दोपहर होने जा रही है। दरबार लगने लगा। नौबत के नगाडे बजन लगे। भाट और बन्दी गण राजा का यशबखान करने लगे। जब पुरुषोत्तम देव सिहासन पर आकर आसीन हुए तो उनकी बिरदावली बखानी गयी। उनकी जय-जय कार हुई। वे सिंहासनारूढ हो गये और सभा में शांति छा गयी।

पुरुषोत्तम देव ने अपने बूढे प्रधानमत्री की ओर देखा वे व्यस्त थे, चिन्तत थे, अकुलाहट उनसे संगम कर रही थी। इसीलिए वे परेशान थे कि धीरे से बोले--"मंत्री दादा, यह कांची का प्रधानमत्री फिर क्यो आया है ?"

"राजकुमार तुम अभी बच्चे हो, कुछ होगा, कुछ हुआ होगा। अगर दाल में कुछ काला नहीं है तो यह मंत्री दुबारा नहीं आ सकता।"

"मंत्री दादा, उसे बुलाओ। उसका मर्म समझो, फिर ।"

"हा फिर सोचा जायेगा राजकुमार। यह राजनीति यह एक समुद्र है। इसकी थाह आज तक किसी ने नहीं पायी।"

फिर जब कांची का प्रधानमंत्री दरबार में उपस्थित हुआ तो पूछे जाने पर उसने अपने आगमन का कारण बतलाया। उसका कहना था कि मैं सम्बन्ध विच्छेद करने आया हू। अब हमारी राजकुमारी का ब्याह कलिंग नरेश के साथ नहीं होगा।

'ऐसा क्यों मंत्री जी ?"

जब पुरुषोत्तम देव ने काची के मंत्री से यह पूछा तो मंत्री स्पष्ट शब्दो में कहने लगा–"आप मेहतर हैं आप झाड़ू लगाते हैं, आप राजा होकर नीच काम करते हैं, ऐसे राजा के साथ मैं अपनी राजकुमारी नहीं

ब्याहूंगा। हमारा टीका वापस कर दीजिएगा।''

"क्या कहा मैं टीका वापस कर दू।''

"हां मै टीका वापस लेने आया हूं।''

अब पुरुषोत्तम देव के क्रोध की सीमा नहीं रही। वह अपनी पराकाष्ठा को पार कर गया। वे आवेश से कापने लगे। उनका चेहरा क्रोध से लाल हो गया। वे तमतमाकर कह रहे थे–"यह टीका कभी वापस नहीं होगा। यदि पद्मावती का ब्याह मेरे साथ नही होता है तो कलिंग की सेना कांची पर आक्रमण करेगी। मै राज्य को जीतूंगा, राजकुमारी को बन्दी बनाऊगा और फिर उसका ब्याह किसी मेहतर के साथ ही करूंगा।''

कांची के प्रधानमंत्री ने ये बातें सुनी तो वह सन्नाटे मे आ गया। उसके साहस ने उसका साथ छोड दिया। यही कारण था कि वह मौन रहा उसका होठ पर से होठ नहीं उठा।

टीका वापस नहीं हुआ। कांची का प्रधानमंत्री अपना-सा मुंह लेकर रह गया। आखिर उसे लौटना पड़ा और वह निराश होकर चल दिया।

कांची के मत्री के जाने के बाद पुरुषोत्तम देव ने अपने महामंत्री का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। वे व्यस्त स्वर मे कहने लगे–"मंत्री जी युद्ध की तैयारी कीजिए कल सवेरा होते ही हमारी सेना काची के लिए प्रस्थान करेगी। हम वहा की ईंट से ईंट बजा देंगे। हमारा दृढ़-संकल्प है कि राजकुमारी पद्मावती का ब्याह किसी मेहतर के साथ ही होगा।

मंत्री सन्नाटे मे आ गया। वह देख रहा था कि राजकुमार गुस्से से पागल हो रहा है। उसका क्रोध चरम सीमा पर है।

कलिंग में सारी रात सेना का संगठन हुआ कोई भी सोया नहीं। यह कहा जा रहा था कि कल सवेरा होते ही कलिंग की सेना कांची के लिए प्रस्थान कर देगी। कांची के राजा ने हमारे राजा का अपमान किया

है। काची पर आक्रमण होगा। वहां का राजा बन्दी बनाया जायेगा और राजकुमारी का ब्याह किसी मेहतर के साथ होगा।

सवेरा होते ही कूंच के नगाडे जोर-जोर से बजने लगे। मारू बाजे भी अपने स्वर बुलन्द करने लगे तोप का एक गोला छूटा धांय की भारी और भयानक आवाज हुई। तभी तुरही बजी, सिहनाद हुआ और नरसिंहा भी पूर्ण रूप से बजने लगा।

पुरुषोत्तम देव अपने साथ पचास हजार सैनिक लेकर कांची के लिए रवाना हो गये।

तब शुभ शकुन हो रहे थे। श्यामा चिडिया मंगल गीत गाती हुई उनके दाहिने से निकल गयी। नुकल ने राह काटी। साथ चल रहे पुरोहित कहने लगे कि यह बहुत शुभ हुआ। जब नेवला राह काट जाये तो समझ लो कि आगे सोना ही सोना है। लाभ ही लाभ है।

सेना आगे बढ़ रही थी। उसे गांव की ग्वालिने मिलीं उनके सिर पर दही की मटकी थी। उनके नूपुर बज रहे थे और पायलों की झनकार होती। वे नारी गति शुलभ कण्ठ से आवाज लगा रही थीं–"दही लो दही, दही ताजा है, दही लो दही।"

अब सेना और आगे बढी उसे एक मुर्दनी मिली। मुर्दा पीत कफन ओढ़े था। उस मातम की बारात में शख बज रहे थे, घड़ियाल टन-टना रहे थे। मुर्दे पर फूल बताशे और पैसे बरसाये जा रहे थे।

"यह भी शुभ है महाराज हमारी यात्रा निर्विघ्न पूर्ण हो रही है।"

राजा के साथ चल रहे राजपुरोहित ने जब यह कहा तो पुरुषोत्तम देव ने संतोष की सांस ली। उन्हे हंसी आ गयी। वे अतीत के पृष्ठ पलटने लगे और वह कहानी पढने लगे, जिसमें जीवन का आदान-प्रदान हुआ था। पद्मावती के प्यार ने उन्हें बांधा था। आंखों ही आंखों में बातें हुई थीं और दोनों एक-दूसरे के हो गये थे।

इधर पुरुषोत्तम देव पद्मावती का स्मरण करते ही व्याकुल हो गये। उधर पद्मावती के मर्म पर आघात हुआ उसका कलेजा कचोटने

लगा और अन्तर कहने लगा 'मैने पतिवरण कर लिया है। वे मेरे स्वामी है। मैने अपने को उनको अर्पण कर दिया है। वे कांची के राज्य को जीतेंगे। उनमें क्षमता है। वे विजयी होंगे। इसमें कोई संदेह नहीं। तब वे मेरा ब्याह किसी मेहतर से करेंगे। उससे पहले मैं जीवन की ज्योति बुझा दूंगी। यह ज्योति केवल उनके लिए जल रही है। मुझे उनसे प्यार हो गया है मैं उनकी हो गयी हूं।''

कांची में हलचल मच गयी। घर-घर में यह सम्वाद व्याप्त होकर रह गया कि कलिंग के राजा पुरुषोत्तम देव ने कांची पर आक्रमण कर दिया है। वे भारी सेना लेकर इधर ही बढे चले आ रहे हैं। वे राजा को पराजित करेंगे। राजकुमारी को बन्दी बनायेंगे। उनका दृढ़-संकल्प यही है।

काची राजा के पास कुल मिलाकर पचीस हजार सेना थी। इसमें हाथी थे, रथ थे और थे घुड़ सवार। पैदल भी गिने थे। उसके पास तोपें नहीं थीं। वह घबडा गया, भयभीत हो गया और उसका अन्तःकरण कहने लगा कि मेरी पराजय अवश्य होगी।

❑

पराजय

पुरुषोत्तम देव की सेना ने आकर काची के दुर्ग को चारों ओर से घेर लिया। तोपे लगा दी गयीं। घेरा पड चुका था। पुरुषोत्तम देव का दूत कांची नरेश के सामने आया। वह प्रस्ताव लाया था कि यदि राजा युद्ध नहीं चाहते हैं तो अपनी राजकुमारी पद्मावती को पुरुषोत्तम के हवाले कर दें। हमारे राजा पद्मावती को ले जाकर किसी नीच पुरुष के साथ उनका ब्याह करेंगे। वे पद्मावती के लिए ऐसा वर खोजेगे जो पथ पर झाड़ू लगाता हो। जनता का मल-मूत्र धोता हो। वह मेहतर हो। वह अछूत हो। वह नीच हो।

काची नरेश के तनबदन में आग लग गयी। वे जोर से तडपे। उन्होंने ईट का जवाब पत्थर से दिया और युद्ध की तैयारी में जोर-शोर से जुट गये।

सवेरा होते ही युद्ध आरम्भ हो गया खुला मैदान था। दोनों सेनाऐ आमने-सामने डटी थीं। बीच में मारू बाजे बज रहे थे। जैसे ही तोप का पहला गोला छूटा लडाई शुरू हो गयी। पैदल के साथ पैदल भिड गये। उनकी तलवारे आपस में बजने लगीं। उनकी ढाले कट गयीं। उनके कपडे खून से लाल हो गये। किसी का सिर कट कर नीचे गिरता तो किसी के पेट में भाला आर-पार हो जाता। लडाई पूरी गति के साथ हो रही थी। घमासान युद्ध मचा था। जिसका कोलाहल कानों के पर्दे फाड देता।

घोडे दो पैरो से खडे हो जाते वे जोर से हिन-हिनाते। तब उन पर बैठे जवान लगाम अपने होठों से दाव लेते। वे भाल फेंक कर मारते उनकी तलवार चक्रव्यूह की तरह चलती वह चारों ओर के सैनिकों को इस तरह काटतीं जैसे गाजर और मूली हों।

हाथी चिंघाड़ रहे थे। उन पर सोने के होदे रखे थे। पीतल के बडे-बडे घंटे दोनों ओर लटक रहे थे टन-टनाकर बज रहे थे। मखमली अम्बारिया पड़ीं थीं। जिन पर गंगा-जमुनी का काम हो रहा था।

महावत जागरूप थे। वे हाथी के माथे पर बैठे उसके कानों से खेलते और सोने के अंकुश को अवसर पाकर धीरे से मस्तक पर चुभो देते।

तभी होदे से तीर छूटता। वह शत्रु पर आक्रमण करता। कोई योद्धा हाथी को जंजीर से पकड़ रहा था।

हाथी यह जजीर चारो ओर घुमाता उसकी सूड़ यह सारा काम करती। वह सामने के सैनिकों को बुरी तरह विचलित कर देता।

कहीं यह भी देखने में आ रहा था कि हाथी ने जंजीर में शत्रु को लपेट लिया और फिर उसे सूंड के द्वारा अपने स्वामी के हवाले कर दिया।

कहीं-कहीं हाथी नाराज होकर एक-दूसरे से सूंड़ लपेटा हो जाते। उनके दांत आपस में टकराते। वे बुरी तरह चिंघाडते, सुनने वालों के कलेजे दहल कर रह जाते।

घायल चीख रहे थे। वे प्यासे थे। वे पानी मांगते उनकी कोई नहीं सुनता। युद्ध आंवा-झोर हो रहा था। हाथी घायलों को कुचल देते। वे चीख मार कर संसार से विदा हो जाते। घोडे इन घायलों को रौदते। पैदल उन पर से दौडते हुए निकल जाते।

ऐसे ही रथ घायलों को अपना पथ बना लेते।

रथों पर लगी पताकाये हवा में फहरा रही थी। घोडों के कलंगी

बधीं थीं, वे राजसी परिधानों से अलंकृत थे, सारथी जागरूप थे और रथ से तीर पर तीर छूट रहे थे।

साझ होने को आ गयी थी। भगवान भुवन भाष्कर का रथ अस्ताचल की ओर तेजी के साथ बढा चला जा रहा था।

"अब दिन थोडा ही शेष रह गया है। क्या युद्ध कल भी होगा।"

पुरुषोत्तम ने स्वयं अपने से पूछा। उसके भीतर का मानव मचल उठा। उसमें अन्त:करण की प्रेरणा मिली वह विचलित हो उठा। उसने अपना रथ ले जाकर कांची नरेश के रथ के सामने खड़ा कर दिया।

अब पुरुषोत्तम देव रथ से नीचे कूद पडा। उसने कांची के राजा को ललकारा और धिक्कारता हुआ कहने लगा–"सुन नरेश, मैं मेहतर हू और तू पंडित। आज मैं तेरे साथ मल्ह युद्ध करूंगा।"

"कल के छोकरे अभी रेख आयी है। पूरी तरह जवान भी नहीं हुआ। तेरे बाप ने भी कभी मल्ह युद्ध किया था या तू ही करेगा।"

"सुन राजा, तू मेरे बाप का अपमान करता है। मैं तेरी खाल खींच लूंगा।"

'और मैं तेरी जिन्दा ही खाल-खिचवाकर उसमें भूसा भरवाऊंगा।"

"अच्छा, मैं सूप हूं मुझे बोलना आता है। तू चलनी है चलनी। तुझमे बहत्तर छेद हैं।"

अब पुरुषोत्तम देव ने हाथ पकडकर कांची नरेश को जोर से जमीन पर पटका वह उनकी छाती पर चढ बैठा उसने अपनी जेब से डोरी निकाली उनके दोनों हाथ कसकर बांध दिये।

फिर पुरुषोत्तम ने काची नरेश के पैर भी बाधे इसके बाद उन्होंने सारथी को आदेश दिया कि इस दुष्ट को उठाकर रथ में डाल दो। यह हमारा बन्दी है और बन्दी ही रहेगा। इसे स्वतंत्रता तब दूंगा जब इसकी आंखों के सामने ही इसकी राजकुमारी का ब्याह किसी नीच जाति के साथ हो जायेगा। इसका राज्य मै नहीं लूंगा। राज्य मुझे नहीं चाहिए। इसकी जान भी नहीं लूंगा इसे कोई हानि भी नहीं पहुंचाऊगा। इसने

मेरा अपमान किया है उस अपमान का बदला अपमान से लूंगा।

फिर जब कांची के राजा को बन्दी बनाकर रथ में डाल दिया गया तो पुरुषोत्तम देव ने सारथी को आदेश दिया। वह व्यस्त स्वर मे कहने लगा--"कि इस बन्दी को मेरे शिविर में पहुंचा दो। यह मेरे निरीक्षण में रहेगा। यह मेरा घोर शत्रु है।"

अब युद्ध समाप्त हो गया था। कांची के राजा की पराजय हुई थी। उधर से सफेद झण्डे दिखलाये जाने लगे। सैनिकों ने अपने-अपने हथियार डाल दिये। रण भेरी जोर से बजी ऐसे ही नरसिंहा गूंजा भाट और बन्दी गण बखानें करने लगे। उनके स्वर उच्च थे। वे ऊचे स्वरों में ही कह रह थे--"महाराज पुरुषोत्तम देव की जय। हमारे कलिंग नरेश विजयी हुए हैं। हम उन्हें बधाई देते है। वे हमारी बधाई के पात्र हैं।"

अब पुरुषोत्तम देव ने अपना आदेश जारी किया। उन्होंने कठोर आज्ञा दी। वे पत्थर की तरह सख्त होकर बोले--"जाओ राजकुमारी पद्मावती को मेरे सामने बन्दी बनाकर ले आओ। उसका ब्याह किसी नीच से होगा। वह नीच ही नहीं महानीच होगा।

राजकुमारी पद्मावती को बन्दी बना लिया गया। वह पुरुषोत्तम देव के सामने लायी गयी। उसने उनकी आखों में झांकना चाहा, उन आंखों से पूछना चाहा कि मेरा अपराध क्या है ?

किन्तु इतना अवसर ही नहीं मिला। उन आंखो ने पद्मावती को झांकने का मौका नहीं दिया। उनकी सफेद पुतलियां लाल हो रही थीं। उनसे खून बरस रहा था।

"ले जाओ इस बन्दी राजकुमारी को इसे किसी निम्न श्रेणी के स्थान पर रख दो। यह निम्न है। यह हेय है। प्रधानमंत्री से कहना है कि इसके लिए कोई मेहतर या कोई नीच कार्य करने वाला वर खोजें। इसके बाप के सामने इसका ब्याह होगा। इसके बाद मैं उसका राज्य वापस लौटा दूंगा।"

राजकुमारी पद्मावती अपने भाग्य पर सिसकियां लेने लगी।

उसकी बुद्धि काम नहीं कर रही थी, उसका विवेक साथी नहीं ब
परिस्थितियां कह रही थीं कि परिवर्तन ही परिवर्तन है तुम परेशा
जाओगी। राजकुमारी तुम्हारी किस्मत तुम्हारा इम्तहान ले रही है
बुरे दिन आते हैं तो ऐसे ही आंधी-तूफान बन जाते हैं। जब त
करवट लेती है तो उजाला भी अंधेरा दिखलायी पड़ने लगता है।
ही भाग्य चक्र है। इसे ही संसार चक्र भी कहा जाता। यही माया
है। यही एक भ्रम है। जिसके मंच पर मनुष्य जीवन भर नाचता
नाचता ही रहता है।
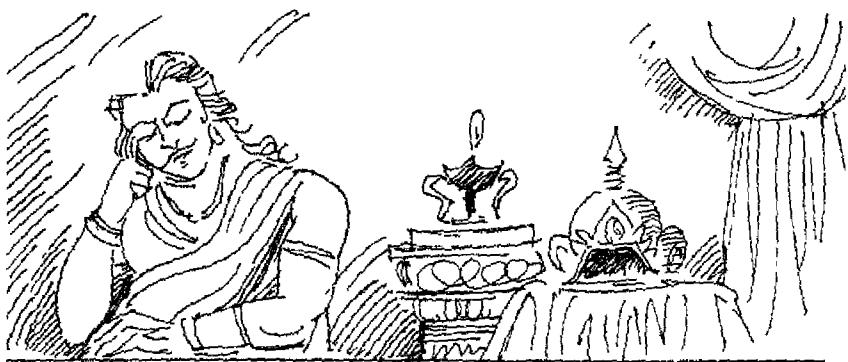
कलिंग में

कलिंग के राजा पुरुषोत्तम देव जब विजयश्री प्राप्त करके कलिंग के लिए रवाना हुए तो उनके साथ बन्दी के रूप में कांची का राजा था। पद्मावती को भी नजर बन्द कर दिया गया था। वह पालकी में बैठी थी। उस पर कड़ा पहरा था।

चलते समय पुरुषोत्तम देव ने कांची राज्य वहां के मंत्रियों को सौंप दिया था। उनका कथन था कि मेरी और राजा की लड़ाई केवल सिद्धांतों की है। उन्होंने मुझे मेहतर कहा है। मेहतर की संज्ञा दी है। मैं उसी का उचित उत्तर उन्हे दे रहा हूं।

कलिंग में खुशियां मनाई गयीं। नगर मे रात भर रोशनी हुई, हर घर मे दीवाली मनाई गयी। दूसरे दिन विजयपर्व का उत्सव था। इसीलिए राजसी मेला लगा। रात को रास लीला हुई फिर सवेरे खैरात बांटी गयी।

पुरुषोत्तम देव का दासियों से यही कहना था कि कांची की राजकुमारी पद्मावती मेरी बन्दी अवश्य है किन्तु वह नजर बन्द है जो सेविका उसे हंसाती रहेगी। वह मुझसे उचित पुरुस्कार पायेगी।

यह प्रगट में था भीतर जब पुरुषोत्तम देव ने हृदय के दोनों पट खोले तो उन्हें एक ही मूर्ति दिखलाई दी। वह राजकन्या पद्मावती थी।

एक ओर प्यार था। वह हृदय के तारों से खेल रहा था। एक ओर संकल्प था और कठोर प्रण था।

पुरुषोत्तम देव को ऐसा लग रहा था कि वे दो नावों पर पैर रख कर चल रहे हैं। वे प्यार की पूजा करें या कर्तव्य की रक्षा करे। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

पद्मावती ने सोच लिया था कि जब उसका ब्याह किसी अन्य पुरुष के साथ किया जायेगा तो वह अपने पर खेल जायेगी। अपनी जीवन लीला समाप्त कर देगी।

पद्मावती के हाथ में हीरे की अंगूठी पडी थी। वह बार-बार उस अगूठी के नगीने को देखती और अपने आप से कहने लगती कि जहां समस्या होती है वहां उसका समाधान उससे पहले ही आकर प्रस्तुत हो जाता है।

पुरुषोत्तम देव ने अपने महामंत्री को बुलवाया तब उसका विशेष दरबार लगा था और यह दरबार अन्तःपुर में था।

राजा ने मंत्री से कहा—"आज से एक महीने के अन्दर कांची की राजकुमारी पद्मावती के लिए कोई नीच वर खोजना है। यदि वह मेहतर हो तो बहुत अच्छा रहेगा। उसी के साथ राजकुमारी का ब्याह किया जायेगा।

कलिग का मंत्री बूढा था। उसने पुरुषोत्तम देव को गोद में खिलाया था। वह उनका स्वभाव भी जानता था। उसका अन्त करण कह रहा था कि यह प्यार का गुस्सा है। वह प्यार की शिकायत है। उसका मीठा उलाहना है।

यही कारण था कि मंत्री ने अवसर पाकर अपने राजा को समझाने का भर्षक प्रयत्न किया। उसका कहना था कि पद्मावती को अंगीकार कर लो राजन, हमारी राजधानी को एक महारानी की आवश्यकता है। जिससे प्यार हो राजन उसका अपमान नहीं करना चाहिए। प्यार की पूजा होती है तो वह प्यार अमर हो जाता है। प्रण, संकल्प, घोषणा, यह प्यार के हथौडे हैं। ये प्यार का नन्हा-सा दिल तोड़ देते व उसमें दर्द भर देते हैं। कोई साथ नहीं देता दुनिया में केवल प्यार अमर है।

पुरुषोत्तम देव की समझ मे महामंत्री की बाते अच्छी तरह आतीं किन्तु वह प्रगट मे अपने को बदलने के लिए बिलकुल तैयार नहीं थे। उसका अन्त.करण कह रहा था कि तुमने कठोर संकल्प लिया है। तुम्हे उसका निर्वाह करना है। तुमने कांची का युद्ध इसीलिए जीता है कि अपने अपमान का बदला लो।

समय आगे बढ रहा था। पुरुषोत्तम देव की घोषणा पूरे कलिग मे हो चुकी थी कि कांची की राजकुमारी पद्मावती बन्दी है। उसका ब्याह किसी नीच जाति के युवक से किया जायेगा यदि वह युवक मेहतर हो तो वह बहुत अच्छा रहेगा।

यही हो रहा था वर की खोज की जा रही थी। महामंत्री परेशान था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे, यदि राजा को किस तरह समझाये। वह अच्छी तरह जानता था कि यदि पद्मावती का ब्याह किसी नीच जाति के युवक के साथ हो गया। तो राजा पुरुषोत्तम देव को गहरी ठेस पहुंचेगी।

राजा की घोषणा पूरे कलिंग प्रदेश में हो चुकी थी। पद्मावती के लिए कोई नीच जाति का वर खोजा जा रहा था मगर वह मिल नहीं पाता। उसके लिए कोशिश पर कोशिश हो रही थी।

पद्मावती ने अन्न-जल त्याग दिया था। वह दिन-रात पुरुषोत्तम देव के नाम की माला जपती। उसने सोच लिया था कि इसी तरह अपने जीवन का अन्त कर देगी।

इधर पद्मावती की यह परिस्थिति थी और उधर पुरुषोत्तम देव का भी हाल अच्छा नहीं था। उनका प्यार उन्हें पुकार रहा था। उनका हृदय उनसे कह रहा था कि प्यार की मासूम कली को तोडो मत। उसके अरमानो का खून मत करो। प्यार की चादर फैला दो, सारे का सारा प्यार उसमें सिमट जायेगा।

कलिंग का महामंत्री बयोवृद्ध था। वह अपने कर्तव्य को भी भलीभांति पहचानता था। इसके अतिरिक्त यह भी जानता था कि उसे

राजकुमार की खुशी के लिए क्या करना है। उसके पिता ने मरते समय अपने महामंत्री से वचन लिया था कि आज से पुरुषोत्तम देव तुम्हारा बेटा है। तुम मंत्री नहीं उसके बाप हो। उसे प्यार देना। उसकी बलायें लेना। उसे कभी अनुभव न हो कि उसका बाप मर गया है।

मंत्री पुरुषोत्तम देव को अपने अंक मे समेट लेता, वह बच्चों की तरह रो देता और फूट-फूटकर कहने लगता–"बेटा पुरुषोत्तम देव मैं मंत्री नहीं, तुम राजा नहीं, तुम किसी की सौंपी हुई अमानत हो। तुम मेरे धर्म-पुत्र हो। यदि मुझे जीवित देखना चाहते हो बेटा तो मेरा कहना मान लो। राजकुमारी पद्मावती के साथ शादी कर लो। तुम्हारी खुशियां लौट आयेंगी। तुम्हारे बाग में बसन्त-बहार बन कर छा जायेगा।"

किन्तु पुरुषोत्तम देव का प्रण उन्हें पागल कर रहा था। वे उसी लकीर को पीटते चले आ रहे थे। वे किसी की भी नहीं सुनते। किसी को भी उत्तर नहीं देते। आवेश उनके साथ था और वे उसी क्रोध के प्रवाह में बहे चले जा रहे थे।

सतयुग में एक महायोगी दूसरे कर्मयोगी से भेंट करने गये दोनों ने एक-दूसरे को ज्ञान दिया। उनमें बातें हुई। कर्मयोगी ने कहा कि कर्मप्रधान है और मर्मयोगी का कथन था कि मनन सबसे आगे और सब कुछ है।

दोनों सिद्ध पुरुष एक केन्द्र बिन्दु पर आकर ठहर गये। यह केन्द्र बिन्दु था क्रोध। मानसिक उन्माद। मनुष्य का पागलपन।

कर्मयोगी ने कहा–"मनुष्य क्रोध को जीत ले फिर वह अमर हो जाता है।"

मनस्वी ने उत्त्र दिया–"क्रोध को जीतने वाले अब नहीं। अब वह युग नहीं रहा, तब त्रेता था। वशिष्ठ को क्रोध नहीं आता। विश्वामित्र उनसे संघर्ष कर रहे थे उन्हें हानि पहुंचा रहे थे।

महामंत्री दिन भर सोचता और रात तक उसकी समझ मे कुछ भी

नहीं आता, बल्कि उसकी हैरानी आवश्यकता से अधिक बढ जाती और वह अपने में सोचता ही रहता।

कलिंग की पूरी प्रजा को इस बात का आभास बहुत पहले ही हो चुका था कि राजकुमार पुरुषोत्तम देव को कांची की राजकुमारी पद्मावती से प्रेम हो गया है। दोनों की लगन एक-दूसरे से लगी है। उनका प्यार सच्चा है और वह कसौटी पर कसा जा रहा है।

यही कारण था कि प्रजा भी अपने राजा के लिए मगल कामना करती थी। वह भी हर तरह से चाहती थी कि उसकी महारानी पद्मावती बने और उन्हें पटरानी का पद दिया जाये। वे सवा लाख की लहर पटोर पहने उनके गले में नौ लखा हार हो।

इस तरह दिन जा रहे थे रातें आ रही थीं। धूप चढती। सांझ ढलती। विरही पपीहा रात के अंतिम प्रहर मे गगन पर पंख फैलाकर उड़ता। वह पी-पी की पुकार करता। वेदना उसे पी रही थी। और वह पीड़ा को पीकर प्यार का राही बन गया था।

❑
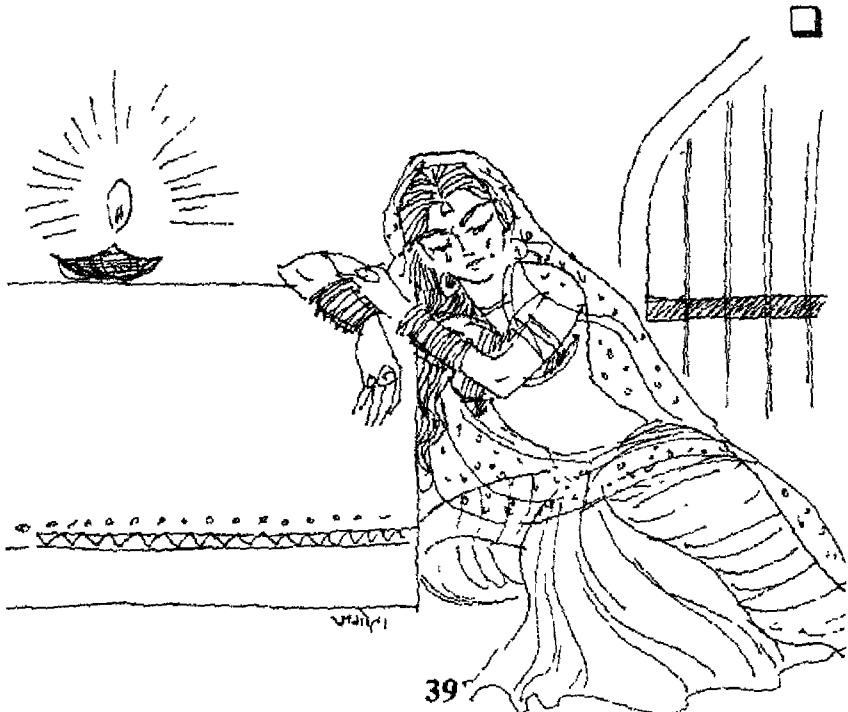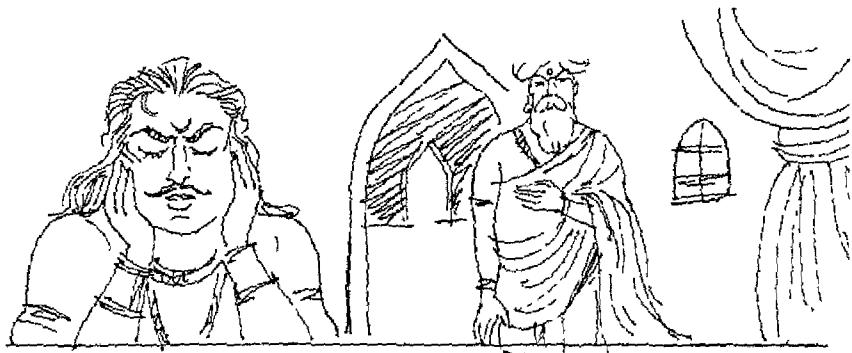
शुभकामनायें

राजकुमारी पद्मावती के ब्याह में अब केवल चार दिन शेष रह गये थे। कलिंग की सारी प्रजा उस राजकुमारी के लिये अपनी शुभकामनाये कर रही थी। सभी का एक स्वर था, सभी की मौन विनय थी, सभी की परमात्मा से यही प्रार्थना थी कि पद्मावती शत्रु की पुत्री नहीं हमारे राजा के हृदय की कली है। ऐसा बरदान हो ईश्वर कि वह कली फूल बने और मुस्करायें।

पुरुषोत्तम देव के दो रूप हो गये थे। प्रगट में वे कठोर थे। राजा कलिंग नरेश कहलाते लेकिन उनके भीतर मोम का हृदय था जो वेदना की आंच पाकर पिघल उठा था। अतीत के सपने अब चलचित्र बन गये थे। वे अनायास ही आंखों के सामने आ जाते।

राजकुमार व्याकुल हो जाता। उसके माथे पर पसीना आ जाता। वह सोच नहीं पाता कि उसे क्या हो गया है और ऐसा क्यों है।

इस तरह कलिंग नरेश जब भी एकान्त में होते तो उनका प्यार उन्हें अकुलाहट से भर देता आंखे पूरी तरह विचलित हो जाती।

अब केवल दो दिन शेष रह गये थे। प्रजा की अकुलाहट आवश्यकता से अधिक बढ गयी थी। दरबार नहीं लगता। पुरुषोत्तम देव की मानसिक स्थिति अच्छी नही थी। इसीलिए उन्होंने विश्राम करने का निश्चय किया।

राजा की कठोर आज्ञा थी कि उनकी अनुमति के बिना कोई भी

कक्ष मे प्रवेश न करे द्वार पाल प्रतिहारी से यही कह दिया गया था

कक्ष मे झाड़-फानूसो की रंगीन रोशनी हो रही थी। अगरवत्तियग सुलग रही थीं। उनकी सुवासित सुगन्ध वातावरण को मुखरित कर रही थी।

किन्तु राजा के चेहरे पर उदासी के बादल छाये थे। उनका अन्त.करण कह रहा था कि अगर यही स्थिति रही तो वे पूर्णतया पागल हो जायेंगे इसमे कोई संदेह नहीं। उन्होंने अपने पवित्र प्यार को श्राप दिया है। निर्दयी बन रहे हैं। क्या पहले वे आस्तिक थे और अब नास्तिक बन गये हैं।

राजा की दृष्टि अचानक सामने शृंगारदान पर रखे चांदी के दर्पण पर पड़ गयी। यह दर्पण भव्य था।

राजा शीशे के पास आ गये वे उसमें अपना मुंह देखने लगे। चेहरा उदास था, माथे पर चिंता की रेखायें थीं, सूरत रोनी-सी लग रही थी, आंखों में पछतावा था।

कई क्षण तक पुरुषोत्तम देव उसी स्थिति में खडे रहे। उसके बाद उन्होंने एक लम्बी सांस ली। और यह सत्य है कि मै पद्मावती के साथ अन्याय कर रहा हू ?''

"हां, यह सत्य है।''

"ऐं !''

'हां।''

"तो मुझे क्या करना चाहिए ?''

"तुम राजा हो, तुम सब कर सकते हो।''

"क्या कहा, मैं सब कर सकता हूं ?''

"हां, तुम सब कर सकते हो।''

"तो क्या करूं ?''

"तुम पद्मावती के साथ ब्याह कर लो।''

"पद्मावती के साथ ब्याह कर लूं ?''

"हां, पद्मावती के साथ ब्याह कर लो।'

"मेरी समझ में नहीं आता है।"

"तुम्हारे पाप का यही प्रायश्चित है, तुमने अपने अपमान का बदला ले लिया।"

"लेकिन इससे मेरे चित्त को शांति नहीं मिली।"

"अब शांति मिलेगी जिस कार्य को सब चाहते हैं, तुम उसे भी कर डालो तुम्हारे लिए यही अच्छा रहेगा।

पुरुषोत्तम देव की समझ में कुछ भी नहीं आया। वे पहले से भी अधिक हैरान हो गये और बिस्तर पर आकर बैठ गये। उनके सिर में पीडा होने लगी थी। वे बुरी तरह हैरान थे।

इधर पुरुषोत्तम देव अपनी परिस्थिति से गुजर रहे थे और उधर राजकुमारी पद्मावती ने आत्म बलिदान का निश्चय कर रखा था।

राजकुमारी मौन थी। वह अपने अन्तःकरण से बातें करती तो इस नतीजे पर पहुंचती कि उसने पुरुषोत्तम देव को अपना पति वरण किया है। उनके अतिरिक्त वह किसी दूसरे पुरुष को अपना पति स्वीकार नहीं कर सकती। वह आर्य्यवर्त जैसे पवित्र देश की राज कन्या है। उसने मर्यादा पर चलना सीखा है। उसके सामने उसका आदर्श है वह उसी का पालन करेगी।

राजकुमारी बहुत दुःखी थी। आधी रात का समय था उसे नींद नहीं आ रही थी। वह उठकर बिस्तर पर बैठ गयी और भविष्य के लिए विचार करने लगी कि उसे क्या करना चाहिए।

ऐसे में ही पद्मावती के अन्तःकरण ने उससे कहा–"तुम तुच्छ भावना पर उतर आयी हो राजकुमारी।"

"तुच्छ भावना कैसी ?"

"तुमने जीवन का अन्त कर देने का निश्चय कर लिया है यह अनुचित है।"

"कैसे ?"

"तुम्हें आत्म-हत्या नहीं करनी चाहिए।"

"क्यों ?"

"आत्म-हत्या पाप है।"

"यह मैं भी जानती हूं।"

"फिर ?"

"फिर क्या मेरे जीवन में अब कुछ भी नहीं रह गया। मेरी समझ में भी कुछ नहीं आ रहा है। इसीलिए विवश होकर मैंने यह फैसला किया है कि जब मेरा ब्याह किसी नीच जाति के युवक से किया जायेगा तो मैं हीरा चाटकर अपने प्राण दे दूंगी। मेरे सामने एक यही उपाय है और कोई दूसरा रास्ता नहीं।"

"राजकुमारी तुम भूलती हो।"

"क्या ?"

"तुम्हें समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए।"

"किन्तु भविष्य अंधकारमय है।"

"वह उज्जवल हो जायेगा।"

"कैसे ?"

"यदि तुम्हारा प्यार सच्चा है तो उस प्यार की जीत होगी।"

"ऐं !"

"हां मैं सच कह रहा हूं राजकुमारी। यदि तुम भगवान पर भरोसा करोगी। तो तुम्हारी समस्या अपने आप ही सुलझ जायेगी। कोई भी कठिनाई ऐसी नहीं होती जो आसान न बन सके। धैर्य से काम लो। धैर्य बिगड़े काम बनाता है।"

"कुछ भी समझ में नहीं आता। सभी लोग मेरे पक्ष में हैं। सभी मेरा हित चाहते हैं। मगर राजा कठोर हो गये हैं। उन्होंने कठोर प्रण कर लिया है। उनके आगे प्रण का महत्व है और अपने प्यार का कुछ भी नहीं।"

"राजकुमारी डूबा हुआ सूरज फिर निकलता है। धरती पर फैला

अधेरा दूर हो जाता है फिर शाम व रात जाती है ऐसे ही बदल
इसान की तकदीर और वह चौक कर रह जाता है।''

पद्मावती ने तकिया में सिर गड़ा दिया और वह सिसक-सि
कर रोने लगी। तब रात के राही चाद और सितारे अपनी मंजिल
करते-करते थक चुके थे। पूरब का आकाश सफेद होने लगा थ

दूर कहीं मुर्गा बोला उसकी कुकुरू कूं-कुकुरुकू स्पष्ट सुना
रही थी। पद्मावती रो रही थी। उसके आंसुओं का वेग बढ गया
अपने भाग्य को धिक्कारने लगी। उसे दोष देने लगी कि अगर उ
तकदीर अच्छी होती तो यह सब कभी नहीं होता। आदमी जो स
है जब वह हो नहीं पाता तो उसकी निराशा उसे विवश कर देती
और वह मेरी तरह ही आत्म-हत्या करने की सोचने लगता है

अब पद्मावती बिस्तर पर बैठी नहीं रह सकी वह उठकर ख
गयी। वह कमरे में टहलने लगी। उसने देखा कि प्रतिहारी युवती
पर खडी है। वह सजग है। उसके हाथ में भाला है।

अब पद्मावती खिड़की के पास आयी। वह झांक कर बाह
कर दृश्य देखने लगी। उजाला अंधेरे से संगम कर रहा था। रा
रही थी और प्रभात आ रहा था।

ब्याह

आखिरी दिन आ गया। उसका प्रभात भी हो चुका था। बूढा मत्री परेशान था। वह कुछ भी नहीं कर पाया। उसने एकबार राजकुमार को समझाने की फिर कोशिश की मगर सब व्यर्थ रहा। पुरुषोत्तम देव ने जो प्रतिज्ञा की थी वे उसी पर अडिग थे।

उसी दिन रथयात्रा का महोत्सव था। जगन्नाथ भगवान की सवारी निकलने वाली थी। भव्य रथ तैयार किये गये। उन्हें खूब अच्छी तरह सजाया गया था। एक रथ जगन्नाथ जी का था जो सबसे आगे था, बीच मे था बहन सुभद्रा का रथ, पीछे बलराम का रथ था।

इन रथों को खीचने के लिए भक्तो की अपार भीड़ लगी थी। सभी में उमंग थी। सभी में एक नया उत्साह। सभी उत्सुक थे कि रथ हम भी खींचेंगे। हम भी पुण्य कमायेंगे। आज रथयात्रा का महान पर्व है हमारा भी कल्याण होगा।

राजा पुरुषोत्तम देव हाथ में झाड़ू पकडे आगे-आगे चल रहे थे। वे झाड़ू लगाते मार्ग साफ करते। जनता यह देख कर हर्ष ध्वनि कर रही थी। वह कभी भगवान जगन्नाथ की जय-जयकार बोलने लगती। कभी सुमद्रा और बलराम की जय बोलती।

ऐसे ही राजा की प्यारी प्रजा श्रद्धा विभोर हो जाती और वह राजा पुरुषोत्तम देव की जय-जय कार करने लगती।

बाजे बज रहे थे। हर्ष ध्वनि हो रही थी। शंख और घडियाल भी

टन टना रहे थे। भीड़ पर भीड़ उमड़ी चली आ रही थी। उत्सव पूर्ण हो रहा था रथ खीचे जा रहे थे। राजा झाडू लगाने में व्यस्त थे। वे भी श्रद्धा विभोर हो रहे थे।

मंत्री के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। वह हैरान था और अकुलाहट से भर रहा था। उसे लग रहा था कि आज अंतिम दिन है। वह पुरुषोत्तमदेव को क्या उत्तर देगा ?

रथ आधी दूर तक खीचे जा चुके थे। भगवान के रथों पर जनता श्रद्धा विभोर होकर फूल और बताशे लुटा रही थी जोर के नारे बुलन्द होते–"जगन्नाथ भगवान की जय, सुभद्रा माता की जय बलराम भगवान की जय।"

राजा रथ बुहार रहे थे। वे सामने आ गये और रथ के आगे झाडू लगाने लगे। तभी मंत्री जोर से चिल्लाया–"मुझे कांची की राजकुमारी पद्मावती के लिए वर मिल गया। वह मेहतर है, वह झाडू लगाता है, वह नीच है।"

रथयात्रा रुक गयी। लोग चौकन्ने हो गये। सभी के कान खड़े हो गये।

राजा पुरुषोत्तम देव भी सन्नाटे में आ गये। वे भौचक्के से होकर अपने बूढ़े मंत्री का मुंह देखने लगे।

तभी मंत्री फिर कहने लगा–"पद्मावती के लिए वर खोज लिया। आपका प्रण पूरा हो गया।"

"कहां है वह मेहतर ?"

"वह मेहतर मेरे सामने खड़ा है।"

"क्या कहा मेहतर तुम्हारे सामने खड़ा है ?"

"हां पद्मावती का वर मेरे सामने खड़ा है।"

"मुझे दिखलाओ।"

"यह रहा पद्मावती का वर।"

यह कहने के साथ मंत्री ने राजकुमार की बांह पकड़ ली। वह

व्यस्त स्वर में कहने लगा–"तुम मेहतर हो, तुम नीच हो, तुम झाड़ू लगा रहे हो। आज के दिन यही होता उसके बाद फिर तुम राजा हो। आपने मुझे जो आज्ञा दी थी। मैंने उसका पालन कर दिया। आज पद्मावती के ब्याह का अंतिम दिन है। अब आप उसे पत्नी के स्वरूप में स्वीकार कीजिए। यह एक अकेला मेरा ही नहीं पूरी प्रजा का अनुरोध है।

राजा पुरुषोत्तम देव के हाथ से झाड़ू छूट कर धरती पर गिर पडी। वे सन्नाटे में आ गये और भौचक्के से होकर इधर-उधर देखने लगे।

तभी प्रजा का उच्च स्वर उसके मानों में गूंजने लगा वह हर्ष से आलोडित हो रही थी। उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। वह उसी प्रसन्नता के आवेग में कह रही थी।–"महारानी पद्मावती की जय, महाराज पुरुषोत्तम देव की जय। हमारे महामंत्री जिन्दाबाद, कलिंग के मंत्री की जय हो। ईश्वर हमारे मंत्री को अमर करे। महामंत्री जिन्दाबाद।''

अब बूढ़े मंत्री ने हंसकर उसी विशाल जन समूह में पुरुषोत्तम देव को खीच कर अपने वक्ष से लगा लिया। उसके आंसू आ गये। वह गद-गद कण्ठ से कहने लगा–"बेटा यह ब्याह मंगल मय हो। अब तुम मेहतर नहीं राजा हो। तुम वही पुरुषोत्तम देव हो जो छोटे से थे और जिसे मैंने गोद में खिलाया था।

पुरुषोत्तम देव मंत्री के कंधे से लग गये। वे उसके सामने लज्जित हो गये थे। अपने पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए उन्होंने झुककर मंत्री के दोनों चरण-स्पर्श कर लिए। उनके मुंह से निकला–"आप मंत्री नहीं मेरे धर्म पिता हैं। मुझे क्षमा कर दीजिए मैं आवेश में पागल हो गया था।''

मंत्री ने पुरुषोत्तम देव को फिर शिशु की तरह वक्ष [illegible] लिया। उसने प्यार से उनके सिर पर हाथ फेरा और फिर स्नेह भरे स्वर में कहने लगा–'बेटा आज ही तुम्हारा ब्याह पद्मावती के साथ होगा, आज

शुभ दिन है। रथयात्रा के उत्सव के बाद ब्याह की तैयारी आरम्भ हो जायेंगी।''

पुरुषोत्तम देव ने मंत्री के वक्ष में अपना सिर गडा दिया। जन समूह में तालियों की गड़-गड़ाहट जोर से बज उठी। जोर का नारा गूंजा-"राजा पुरुषोत्तम देव की जय, महामंत्री की जय।''

उसी रात्रि को पद्मावती का ब्याह हो गया। पहले वह कांची की राजकुमारी थी और अब कलिंग की महारानी बन गयी।

कुछ दिन बाद पुरुषोत्तम देव महारानी पद्मावती के साथ अपने वृद्ध मंत्री को लेकर कांची गये। वहां कांची नरेश से क्षमा मांगी और उन्हें उनके सिंहासन पर पुनः बैठा दिया। कांची नरेश ने नव दम्पत्ति को आशीर्वाद दिया। उन्हें अपनी भूल पर पछतावा हो रहा था। इसी लिए लज्जित थे और मन ही मन दुःखी थे।

❑❑❑